आजीविका टुडे

उत्तराखण्ड हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना

इस अंक में...

परियोजना पहल 2
परियोजना क्षेत्र से सीख 3
स्टॉफ का संदेश 4

अंक 1 अक्टूबर 2010

परियोजना निदेशक का संदेश

उत्तराखण्ड के पांच जिलों में चल रही हमारी परियोजना की बहुआयामी गतिविधियों के मद्देनजर, हमने परियोजना की रणनीतियों, गतिविधियों एवं उपलब्धियों के अनुभव बांटने हेतु, एक त्रैमासिक न्यूज लेटर को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस बुलेटिन का पहला अंक, अवलोकनार्थ आपके हाथों में है। इसके लिये मैं अपनी परियोजना के सहयोगियों को उनके प्रयास के लिये बधाई देती हूं। इस बुलेटिन में सुधार लाने के लिये, हमारे सुधी पाठकों के सुझावों का हमेशा स्वागत है।

श्रीमती रंजना काला

परियोजना के विषय में :

उत्तराखण्ड हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना, उत्तराखण्ड ग्राम्य विकास समिति (UGVS) द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। यह समिति उत्तराखण्ड सरकार द्वारा सोसायटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1860 के अंतर्गत पंजीकृत है। ग्राम्य विकास विभाग इस परियोजना हेतु नोडल एजेन्सी है।

UGVS द्वारा ULIPH के व्यावसायिक घटक को कार्यान्वित करने हेतु उत्तराखण्ड पर्वतीय आजीविका संवर्धन कम्पनी (उपासक) स्थापित की गई है। जिसका पंजीकरण सेक्शन 25, कम्पनीज् एक्ट 1956 के अन्तर्गत हुआ है।

ULIPH का क्रियान्वयन अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास निधि (आईफैड) की सहायता से किया जा रहा है।

हमारे लक्ष्य :

★ समाज के कमजोर वर्गों हेतु बेहतर आजीविका अवसरों को प्रोत्साहित करते हुए उनकी आजीविका सुधार में निरन्तरता लाना और आजीविका विकास से सम्बन्धित संगठनों को सुदृढ़ करना।

★ परियोजना का प्राथमिक लक्ष्य गरीब परिवारों को सीधा आर्थिक लाभ पहुंचाना है, जिसमें पूंजीगत संसाधनों पर स्वामित्व, आजीविका संवर्धन की गतिविधियों को बढ़ावा देना एवं व्यापार विकास सेवाओं द्वारा लघु एवं मध्यम उद्यमों का विकास करना व बैंक/वित्तीय संस्थानों से या उनकी योजनाओं से जोड़ना सम्मिलित है।

श्रीमती विजया बर्थवाल, माननीया ग्राम्य विकास मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार

मेरे लिये यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि ULIPH अपनी बहुआयामी गतिविधियों से सम्बन्धित एक न्यूज लेटर का प्रकाशन करने जा रहा है। मेरा मानना है कि इस तरह के बुलेटिन के प्रकाशन, की उत्यन्त आवश्यकता थी ताकि सम्बन्धित लोगों को ULIPH की उन विभिन्न गतिविधियों के विषय में ज्ञान हो सके जिन्हें वह ग्रामीण लोगों के व्यावसायिक कौशल को बढ़ावा देने के लिये कार्यान्वित कर रहा है। मैं परियोजना को उनके इस नवीन प्रयास के लिये बधाई देती हू।

हमारी उपलब्धियां :

ULIPH निम्न मूल्य वृद्धि श्रृंखला (वैल्यू चेन) पद्धति से चयनित 'सब–सेक्टर' में कार्य कर रहे हैं

1 जैविक खेती :	19324 आयअर्जक गतिविधियां, 100 लघु एवं मध्यम स्तर के उद्यमतथा सूक्ष्म उद्यम 1545 स्थापित हुए हैं जिनके तहत बीज उत्पादन एवं मधुमक्खीपालन किया जा रहा है।
2 बे–मौसमी सब्जी उत्पादन :	8242 आयअर्जक गतिविधियां, 74 लघु एवं मध्यम स्तर के उद्यम तथा 1571 सूक्ष्म उद्यम जिनके तहत हाई–वैल्यू फसलें उगाई जा रही है।
3 लघु डेयरी :	2285 आयअर्जक गतिविधियां, 113 लघु एवं मध्यम स्तर के उद्यम तथा 969 सूक्ष्म उद्यम जिनके तहत चारा बैंक, प्रशिक्षित पैरावेट तैयार किये गये हैं।
4 मुर्गीपालन :	2976 आयअर्जक गतिविधियां, 80 लघु एवं मध्यम स्तर के उद्यम तथा 2226 सूक्ष्म उद्यमजिनके तहत मांस एवं अण्डे का व्यवसाय किया जा रहा है।
5 ग्रामीण गैरकृषि क्षेत्र एवंईको टूरिज्म :	375 आयअर्जक गतिविधियां, 35 लघु एवं मध्यम स्तर के उद्यम तथा 267 सूक्ष्म उद्यम जिनके तहत होमस्टे आदि की व्यवस्था है।
6 औषधीय एवं सगंध पौधे :	3409 आयअर्जक गतिविधियां, 28 लघु एवं मध्यम स्तर के उद्यम तथा 128 सूक्ष्म उद्यम, जिसके तहत कूट एवं कुटकी का कृषिकरण किया जा रहा है।

मुर्गीपालकों के साथ अनुभव आदान प्रदान कार्यशाला 21 से 22 जुलाई 2010

21 से 22 जुलाई 2010 को देहरादून में उत्तराखण्ड हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना (ULIPH) द्वारा साउथ एशिया प्रो पुअर लाइव स्टॉक पॉलिसी प्रोग्राम (SAPPLPP) के सहयोग से मुर्गीपालन क्षेत्र की रणनीतियों से सम्बन्धित एक अनुभव आदान–प्रदान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुर्गीपालन से जुड़े उद्यमियों, फेडरेशन, बस्तर समेकित पशुपालन विकास कार्यक्रम, प्रदान (PRADAN) पोल्ट्री वैक्सीनेटर मॉडल एवं पश्चिमी बंगाल (BRAC) के ब्रॉयलर मुर्गीपालन के प्रतिनिधियों, बैंक एवं परियोजना स्टाफ ने भाग लिया। श्री एस0के0मट्टू, अपर मुख्य सचिव, वन एवं ग्राम्य विकास, उत्तराखण्ड शासन ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया।

फेडरेशन के सदस्यों द्वारा नेटवर्किंग पर व्यक्त विचार

परियोजना स्टाफ ने, अल्मोड़ा के फेडरेशन के प्रतिनिधियों के साथ फेडरेशनों के नेटवर्क को चिन्हित करने व उन्हें सुदृढ़ करने हेतु एक कार्यशाला आयोजित की जिसमें फेडरेशन के सदस्यों को नेटवर्किंग की अवधारणा से परिचित करवाया गया। उनसे सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्र के साथ मजबूत व कमजोर कड़ियों को चिन्हित करने को कहा गया। फेडरेशन के सदस्यों के बीच कमजोर व मजबूत कडियों पर आपसी विचार विमर्श को प्रोत्साहित किया गया।

इस अभ्यास के पूरा होने पर फेडरेशन स्वयं से सम्बन्धित कमजोर व मजबूत कड़ियों को चिन्हित करने और भविष्य में अपने फेडरेशन के लिये कार्ययोजना विकसित करने में सफल रहे।

ULIPH को स्टेट बैंक का उत्कृष्टता पुरस्कार

आईफैड द्वारा वित्त पोषित उत्तराखण्ड हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना (ULIPH) ने जून 2010 को कमानी प्रेक्षागृह नई दिल्ली में बैंक लिंकेज के लिये स्टेट बैंक का उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त किया। ULIPH की ओर से यह पुरस्कार श्री राजेश सेन, प्रबन्धक सामाजिक विकास एवं श्री अजय शर्मा, प्रबन्धक ग्रामीण वित्त ने प्राप्त किया।

SMS पर आधारित बाजार सूचना तंत्र

ULIPH द्वारा अप्रैल 2010 में, रॉयटर्स मार्केट लाईट (RML) एवं जी0टी0जेड0 (RED) के तकनीकी सहयोग से फेडरेशन के सदस्यों को विभिन्न क्षेत्रों की फसलों, फलों और सब्जियों के बाजार भावों से अवगत कराने के लिये SMS पर आधारित सूचना तंत्र को पायलट के रूप में प्रारम्भ किया गया। उत्तराखण्ड के पर्वतीय जिलों में मोबाईल फोन पर आधारित बाजार सूचना तंत्र को उच्चीकृत करने के लिये, अगस्त 2010 को, RMLएवं अन्य सहयोगियों के साथ एक बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में RML को इस सूचना तंत्र को डेयरी, मुर्गीपालन आदि क्षेत्र में भी विस्तार देने का प्रस्ताव दिया गया जिसको RML ने स्वीकार कर लिया है। RML एवं ULIPH दोनों के संयुक्त सहयोग से इस सूचना तंत्र को विस्तृत किया जा रहा है।

नयी परियोजना की परिकल्पना

उत्तराखण्ड के अन्य जिलों/क्षेत्रों में परियोजना के विस्तार हेतु कॉन्सैप्ट नोट भारत सरकार एवं IFAD को भेजा गया। प्रस्तावित परियोजना के अन्तर्गत लगभग 1 लाख परिवारों को आच्छादित करने का अनुमान है। इसे वर्तमान परियोजना के समाप्त होते ही प्रारम्भ किया जाना प्रस्तावित है। पिछले पांच वर्षो के दौरान आजीविका परियोजना ने विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य किया है जिसके परिणामस्वरूप परियोजना को विस्तार देने का अनुरोध पंचायत प्रतिनिधियों व अन्य साझेदारों द्वारा समय–समय पर किया जा रहा था। माननीय मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड सरकार ने भी IFAD के अध्यक्ष के उत्तराखण्ड के दौरे पर कुछ इसी प्रकार के विचार रखे थे। इसी सन्दर्भ में परियोजना ने अपनी गतिविधियों को राज्य के सभी ग्रामीण परिवारों तक पहुंचाने का प्रस्ताव रखा है।

शब्दशाला (WORDSHOP)

लम्बे समय से परियोजना का स्टाफ अपनी लेखनशैली में परिपक्वता लाने के विचार से एक शब्दशाला आयोजित करना चाहता था ताकि उनका दस्तावेजीकरण कार्य सुन्दर एवं सुरूचिपूर्ण हो सके। इसी के मद्देनजर 19 से 23 जुलाई 2010 तक एक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना क्षेत्र के 22 चुने हुये सदस्यों ने भाग लिया। पहले दो दिन प्रभावशाली लेखन के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया। अगले दो दिनों में सभी प्रतिभागियों ने मुर्गीपालकों की अनुभव आदान–प्रदान कार्यशाला का दस्तावेजीकरण करते हुए रिपोर्ट लेखन का अभ्यास किया। कार्यशाला के अन्तिम दिन प्रतिभागियों के लेखन कौशल का फीडबैक लेकर मूल्यांकन किया गया तथा प्रभावशाली लेखन कौशल को बनाये रखने के लिये जनपदवार रणनीतियां तय की गईं।

फेडरेशन अनुभव आदान–प्रदान कार्यशाला 6–7 सितम्बर 2010

अदरक की खेती : आय का साधन

जिला अल्मोड़ा के सेल्टा चापड़ गांव की श्रीमती चम्पा देवी ULIPH द्वारा बनाये गये SHG, जागृति की सदस्या बनीं। उनके समूह के सदस्यों को ULIPH द्वारा अदरक की खेती करने की नयी पद्धतियों का प्रशिक्षण दिया गया। चंपादेवी ने भी इन पद्धतियों व उन्नत बीज द्वारा अदरक की खेती करने का निर्णय लिया। उन्होंने ₹ 20/- प्रति किग्रा0 की दर से अदरक का अच्छी किस्म का हिमगिरी हाईब्रिड बीज ULIPH से लिया और अपने खेतों में बोया। प्रारम्भ में ही उन्हें इससे 6 क्विटंल अदरक प्राप्त हुआ जिसको उन्होंने ₹ 30/- प्रति किग्रा0 की दर से बेचा। उन्होंने कुछ अदरक अपने समूह के सदस्यों को ही बेचा और कुछ स्थानीय बाजार में बेचा। इस प्रकार उन्होंने कुल ₹ 18000/- का अदरक बेचा। यह उन्नत किस्म के बीज हिमगिरी एवं अदरक की खेती करने के नये तरीकों द्वारा ही सम्भव हो पाया। चंपादेवी के इस कार्य से प्रेरित होकर उनके समूह के अन्य सदस्यों ने भी अदरक की खेती करने का निर्णय ले लिया है। चंपा देवी भविष्य में अदरक की ही खेती करना चाहती है।

बीज उत्पादन से चेहरों पर आयी मुस्कान

वर्ष 2009-10 में चमोली में ULIPH ने फील्ड एवं खेती पर आधारित गतिविधियों को प्रारम्भ किया एवं सोयाबीन, मंडुआ, धान, रामदाना, गहथ, कुट्टू, मदीरा, मक्का, जौ, मसूर और गेहूं के बीजों का उत्पादन 3340 है0 भूमि पर करना प्रारम्भ किया। इस गतिविधि का उद्देश्य अधिक पैदावार वाले उन्नत किस्म के बीजों को उपलब्ध करवाना और अच्छी आय सुनिश्चित करना था ताकि जिला स्तर पर एक बीज बैंक की स्थापना की जा सके। ULIPH के इस प्रयास के कारण परम्परागत बीजों से उत्पादन करने की अपेक्षा 10-15 प्रतिशत तक पैदावार अधिक हुई है। परियोजना इस गतिविधि को तराई विकास निगम के सहयोग से क्रियान्वित कर रही है, जो किसानों को अधिक पैदावार वाले उन्नत किस्म के बीज उपलब्ध करवाता है। वे उन्हीं बीजों की किस्मों को बोने के लिए लोगों को प्रेरित कर रहे हैं जो यहां पर परम्परागत रूप से बोये जाते रहे हैं, उन्होंने चमोली जिले में एक बीज इन्सपेक्टर नियुक्त किया है और उसे ULIPH के साथ सम्बद्ध कर दिया है ताकि वह उन्हें तकनीकी सहयोग, फार्म से सम्बन्धित जानकारियां एवं गुणवत्ता नियन्त्रण सम्बन्धी जानकारियां दे सके और किसानों का पंजीकरण करवा सके जिससे एक सफल बीज उत्पादन कार्यक्रम को सुनिश्चित किया जा सके।

मोरी के जल संवर्धन टैंक

मोरी विकासखण्ड के लोग अत्यन्त गरीब हैं। उन्हें पीने के पानी के लिये लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। अतः सिंचाई के लिये पानी की उपलब्धता काफी कम है। इस क्षेत्र के लोगों की समस्या के मद्देनजर ULIPH ने मोरी के किसानों को सिंचाई के लिये जल संवर्धन टैंक बनवाने की सलाह दी। इस कार्य के लिये श्रीमती सरोजना देवी को लाभार्थी के रूप में चयनित किया गया। न्याय पंचायत 'नानई' में ULIPH अब तक 20 ऐसे टैंकों का निर्माण करवा चुका है। इस कार्य के लिये लाभार्थियों ने 40 प्रतिशत व्यय का वहन किया है, जबकि बाकी लागत ULIPH द्वारा वहन की गयी है। जल संवर्धन टैंक के कारण इस वर्ष दड़गांव की सरोजना देवी को अपने सेब के बगीचों की सिंचाई में कोई कठिनाई नहीं आयी और उनके खेतों से 102 पेटी सेबों की पैदावार हुयी। उन्हें इस वर्ष लगभग ₹ 96,900/- का लाभ हुआ जिसमें से ₹ 6,000/- शुद्ध लाभ था। सरोजना देवी ULIPH को धन्यवाद करना नहीं भूलती और अपने गांव के निवासियों को जल संवर्धन टैंक के लिये ULIPH की सहायता लेने की नसीहत देती हैं ताकि वे भी अच्छी फसल का आनन्द ले सकें।

टिहरी जिले में फिनायल का उत्पादन

ओम आजीविका समूह में 8 सदस्य हैं। यह समूह टिहरी जिले के विकासखण्ड, देवप्रयाग के भरपूर गांव में है। ULIPH ने इस समूह के कुछ सदस्यों को खादी ग्रामोद्योग द्वारा फिनायल बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस समूह के 4 सदस्यों ने वर्ष 2009 में ₹ 4000/- का ऋण लेकर फिनायल बनाने की एक छोटी सी इकाई प्रारम्भ की। वर्तमान में ये लोग मांग के आधार पर ही फिनायल बनाने का कार्य कर रहे हैं लेकिन भविष्य में वे इसका विस्तार करना चाहते हैं। उनके परिवार के लोग उन्हें इस कार्य में पूरा प्रोत्साहन देते हैं और पैकेजिंग व वितरण आदि में उनकी सहायता भी करते हैं। प्रारम्भ में उनके फिनायल की मांग काफी कम थी लेकिन धीरे धीरे इस कार्य से उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹ 2000/- से ₹ 3000/- तक की आय होने लगी है। इस कार्य में सबसे बड़ी परेशानी मार्केटिंग से सम्बन्धित थी जिसका उन्होंने स्वयं फील्ड स्टाफ के साथ मिलकर हल निकाला है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए उन्होंने होटल, धर्मशालाओं, स्थानीय दुकानों और आसपास के गांवों से सम्पर्क किया। उनके इस प्रयास से एक ओर इन महिला उद्यमियों का सामाजिक स्तर बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी हुई हैं।

ब्रॉयलर मदर यूनिट : एक सफल उद्यम

श्री बालकृष्ण, विकासखण्ड बागेश्वर के गौला गांव के निवासी हैं उनकी पत्नी जय सन्तोषी मां स्वयं सहायता समूह की सदस्या हैं। स्वयं सहायता समूह की मासिक बैठक में समूह के सदस्यों को मुर्गीपालन व्यवसाय के फायदों के विषय में बताया गया। बालकृष्ण को इस व्यवसाय का थोड़ा बहुत ज्ञान पहले से ही था। अतः उन्होंने इस कार्य में अपनी दिलचस्पी दिखाई, बालकृष्ण को ULIPH द्वारा 10 दिवसीय मुर्गीपालन का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पंतनगर भेजा गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होनें अपनी मुर्गीपालन इकाई प्रारम्भ की, जिसके लिए 60% धनराशि ULIPH द्वारा दी गयी जबकि 40% धनराशि लाभार्थी द्वारा वहन की गई। ULIPH ने यूनिट प्रारम्भ करने के लिये पंतनगर से बालकृष्ण को ₹ 1000/- प्रतिरक्षित चूजें भी उपलब्ध करवाये। एक महीने की मेहनत के बाद वह ₹ 28,000/- कमाने में सफल रहे। आज वह अपने कार्य से सन्तुष्ट हैं और भविष्य में भी इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहते हैं। अभी वह परियोजना से कुछ अधिक सहायता की उम्मीद कर रहे हैं ताकि वह अपनी बंजर भूमि को भी मुर्गीपालन के लिए उपयोग कर सके। आज वह अपने समूह के लोगों के लिए एक उदाहरण बन चुके हैं।

IFAD अध्यक्ष श्री क्नायो नवान्जो का 2009 में परियोजना भ्रमण

9 कलस्टरों में वर्ष 2010-11 की परियोजना गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु 8 फेडरेशनों के साथ अनुबन्ध

उभरते हुये सामुदायिक संस्थान

ULIPH, 3552 स्वयं सहायता समूह, जिनकी सदस्य संख्या 37059 है, को समर्थन दे रहा है, ताकि समुदाय को प्रेरित किया जा सके और उन्हें सामाजिक एवं व्यावसायिक मुद्दों के विषय में जागरूक भी किया जा सके। इन SHGs की बचत ₹ 514/- लाख है और उनकी आपसी ऋण की राशि ₹ 2,116/- लाख तक पहुंच चुकी है। समूह के सदस्य धनराशि की जरूरत पड़ने पर एक दूसरे को सहयोग तो देते ही हैं, इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की सहायता भी देते हैं। समूह के शीर्ष संगठन के रूप में फेडरेशन का निर्माण किया जाता है जिनको 10 से 20 गांवों के कलस्टरों में से चुना जाता है। एक फेडरेशन में 40 से 50 तक स्वयं सहायता समूह होते हैं। फेडरेशन के सदस्यों की संख्या 300 से 400 सदस्य होती है। इन फेडरेशनों का पंजीकरण उत्तराखण्ड स्वायत्तशासी सहकारिता अधिनियम 2003 के अन्तर्गत किया जाता है। वर्तमान में 75 फेडरेशन कार्य कर रहे हैं जिनसे 18839 सदस्य तथा 2455 स्वयं सहायता समूह जुड़े हैं। इन संगठनों का कोष ₹ 55.73 लाख तक बढ़ चुका है। ये फेडरेशन व्यावसायिक एवं सामाजिक दोनों ही प्रकार के कार्य कर रहे हैं। ये संगठन इनपुट–आउटपुट सेन्टर, डेयरी इकाईयां, मसाले पीसने की इकाईयां, वन संरक्षण एवं शराबबन्दी जैसे कार्य भी संचालित कर रहे हैं।

परियोजना का प्रबंधन सूचना तंत्र MIS

प्रबन्धन सूचना तंत्र अथवा MIS, परियोजना के समुचित प्रबन्धन के लिये एवं क्रियान्वयन हेतु उपयोगी अंग है, जो परियोजना की दशा बताता है एवं दिशा निर्धारित करता है।

सरल शब्दों में MIS का कार्य अन्तर्गत परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु संबंधित सूचनाओं/आंकड़ों का एकत्रण एवं विश्लेषण कर भवष्यि की रणनीति तैयार करना है तथा प्राप्त जानकारी/ज्ञान के आधार पर परियोजना से जुड़े हितभागियों हेतु रिपोर्ट तैयार कर ज्ञान का संचार करना है।

MIS को विकसित करने की प्रक्रिया, परियोजना की सूचना आवश्यकता का विश्लेषण, MIS का प्रयोग व उपयोग से जुड़े कार्यकताओं का क्षमता विकास एवं प्राप्त ज्ञान का उपयोग सम्मिलित है। परियोजना द्वारा तैयार MIS के अन्तर्गत SHG MIS (समूह की प्रगति) एवं HO MIS (परियोजना गतिविधियों की प्रगति) को संकलित किया जाता है जो www.vikasdwar.com/upasac पर सर्वसुलभ है। MIS से जहां परियोजना के समय, श्रम व संसाधनों की बचत हुई, वहीं गुणवत्तायुक्त सूचना एकत्र करनी व विश्लेषण करने में सहायता मिली है।

छठे संयुक्त मूल्यांकन मिशन द्वारा परियोजना क्षेत्र का भ्रमण 24 मई से 7 जून 2010.

ग्रामीण उद्यम

ग्रामीण उद्यम छोटे एवं व्यक्तिगत स्वामित्व वाले, अनौपचारिक, लघु कृषि सम्बन्धित घरेलू उद्यम होते हैं। परियोजना ने लघु उद्यमों को 3 श्रेणियों में रखा है जैसे आय अर्जक गतिविधियां (IGA), सूक्ष्म उद्यम (ME) एवं लघु एवं मध्यम उद्यम (SME) परियोजना चुने हुये क्षेत्रों में जैसे कृषि, बागवानी, पशुपालन, वानिकी, ईकोटूरिज्म एवं कृषि गतिविधियों पर कार्य कर रही है ताकि इन उद्यमों को विकसित किया जा सके। अब तक परियोजना इन सब–सेक्टर में कई व्यावसायिक गतिविधियों का प्रदर्शन कर चुकी है ताकि ग्रामीण गरीब लोगों को स्थानीय संसाधनों पर आधारित विभिन्न आजीविका के अवसरों के विषय में शिक्षित किया जा सके। इन पहलों के तहत कई सफल कार्यक्रमों के शैक्षिक भ्रमण व कई क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित करवाये जा चुके हैं। इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिये, परियोजना वर्तमान एवं आने वाले उद्यमों के लिये वेंचर फण्ड प्रारम्भ करने की प्रक्रिया में है। बागेश्वर जिले के कुछ ऐसे ही लघु उद्यमियों ने सरयू प्योर नामक हल्दी के उत्पाद को विशाल मेगा मार्ट जैसे रिटेल केन्द्रों पर जुलाई 2010 से बेचना प्रारम्भ कर दिया है। वे इस हल्दी को ₹ 250/- प्रति किग्रा की दर से बेचकर 40% तक शुद्ध मुनाफा कमा रहे हैं।

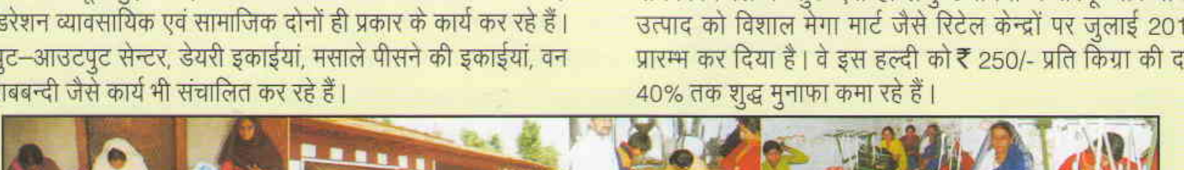

संपादकीय टीम

प्रकाशक : श्रीमती रंजना काला, परियोजना निदेशक उत्तराखण्ड हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना एवं प्रबंध निदेशक उत्तराखण्ड पर्वतीय आजीविका संवर्द्धन कम्पनी

संपादकीय टीम : परियोजना स्टाफ

पता : 272 C, फेज–2, वसंत विहार, देहरादून, उत्तराखण्ड, **फोन नं0 :** 0135-2762800, 2762798, **ई-मेल :** uliph05@yahoo.com,

वेबसाइट : www.ajeevika.org.in, **ब्लॉग :** uliph.blogspot.com

(केवल सीमित वितरण हेतु)

सरस्वती प्रेस, देहरादून, 0135-2726694